त्रि-दिवसीय कार्यशाला

(दिनांक- 18-20 नवम्बर, 2024)

'मार्ग व्यायाम'

प्रतिवेदन

भारतीय चिन्तन परम्परा में नृत्य, गीत और वाद्य की सह-प्रस्तुति को 'नाट्य' कहा गया है। आचार्य भरत ने अपने ग्रन्थ नाट्यशास्त्र में इस नाट्य को पञ्चम वेद के रूप में उल्लिखित किया है, जिसके अन्तर्गत ज्ञान, कर्म, शिल्प, समस्त विद्याएँ और कलाएँ समाविष्ट हैं। महाकवि कालिदास के अनुसार भिन्न-भिन्न रुचि वाले लोगों के लिए प्रायः नाटक ही एक ऐसा उत्सव है, जिसमें सबको एक-सा आनन्द मिलता है। इसी नाट्यकला के शास्त्रीय एवं व्यावहारिक प्रयोग को केन्द्र में रखकर इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के कलाकोश विभाग द्वारा राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली एवं भरत इलंगो फाउंडेशन फॉर एशियन कल्चर, चेन्नई के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 18/11/24 (सोमवार) से 20/11/2024 (बुधवार) तक राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के सम्मुख सभागार में 'मार्ग व्यायाम' विषय पर त्रि-दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रशिक्षक के रूप में पद्म विभूषण डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम्, न्यासी, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली अपनी सहयोगी डॉ. गायत्री कनन, सुश्री रम्या वेंकटरमन एवं सुश्री महती कनन सहित उपस्थित रही। इसके अन्तर्गत प्रतिदिन दो सत्रों का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र के अवसर पर अध्यक्ष के रूप में डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम्, डॉ. सच्चिदानन्द जोशी, सदस्य सचिव, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली, प्रो. चितरंजन त्रिपाठी, निदेशक, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय एवं डॉ. गायत्री कनन, भरत इलंगो फाउंडेशन फॉर एशियन कल्चर, चेन्नई, प्रो. सुधीर लाल, अध्यक्ष, कलाकोश विभाग, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली आदि अनेक गणमान्य विद्वज्जन उपस्थित रहे। भारतीय परम्परानुसार कार्यक्रम का आरम्भ दीप प्रज्ज्वलन एवं मंगलाचरण से हुआ। मंगलाचरण डॉ. इन्द्रेश कुमार शुक्ल, परियोजना सहयोगी, वैदिक हेरिटेज पोर्टल, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा किया गया। इसके अनन्तर प्रो. चितरंजन त्रिपाठी द्वारा स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया गया तथा मंचस्थ अतिथि एवं सुधीजनों का अभिनन्दन किया गया। डॉ. सच्चिदानन्द जोशी द्वारा कार्यशाला की रूपरेखा एवं विषयवस्तु विषयक चर्चा की गयी।

तदनन्तर डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम् ने नाट्यशास्त्र के प्रकाशित संस्करणों एवं इसमें उल्लिखित मार्ग एवं देशी नृत्य, विभिन्न ग्रन्थों के अनुसार नाट्य का स्वरूप आदि के सन्दर्भ में विस्तृत चर्चा की। उन्होंने कहा कि नाट्यशास्त्र सांस्कृतिक नृत्य एवं नाट्य आदि का व्याकरणशास्त्र है। यह सम्पूर्ण संसार की कलाओं एवं भाषा-प्रयोगों आदि का विश्वकोश है। उन्होंने कहा कि मेरे जीवन का मुख्य लक्ष्य सामान्य मार्गों का पुनर्निर्माण करना है। प्रो. कमलेश दत्त

त्रिपाठी द्वारा सम्पादित तथा इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र से प्रकाशित नाट्यशास्त्र के समीक्षात्मक संस्करण के रूप में हुए महत्त्वपूर्ण कार्य की भी उन्होंने प्रशंसा की। तत्पश्चात् प्रो. सुधीर लाल द्वारा कार्यक्रम में उपस्थित सुधीजनों के प्रति आभार प्रकट किया गया तथा नाट्यशास्त्र के दो भागों में प्रकाशित नेवारी संस्करण और विष्णुधर्मोत्तर पुराण में उल्लिखित वज्र-मार्कडेय संवाद आदि का नामोल्लेख करते हुए प्रतिमालक्षण, कलामूलशास्त्र शृंखला के अन्तर्गत परिगणित ग्रन्थ एवं प्रकाशित ग्रन्थ आदि विषयों पर विस्तृत चर्चा की गयी। इस सत्र का विधिवत् सञ्चालन डॉ. शान्तनु बोस, सह आचार्य, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय द्वारा किया गया।

कार्यशाला के द्वितीय दिवस में श्री राम बहादुर राय, अध्यक्ष, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की गरिमामयी उपस्थिति रही। इनके द्वारा शास्त्र और संस्कृति के समग्र बोध के लिए संस्कृत भाषा के ज्ञान के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया। इन्होंने कार्यशाला के अन्तर्गत प्रशिक्षण विधि को अनोखा प्रयोग बताते हुए इसकी सराहना की। कार्यशाला के अवान्तर सत्रों में सभी प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुति दी गई, जिससे सम्पूर्ण कार्यशाला जीवन्त एवं उत्साहपूर्ण बनी रही।

समापन सत्र में डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम्, न्यासी, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, प्रो. भरत गुप्त, न्यासी, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली, डॉ. सच्चिदानन्द जोशी, सदस्य सचिव, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, श्री प्रदीप मोहन्ती, कुलसचिव, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली, प्रो. सुधीर लाल, अध्यक्ष, कलाकोश विभाग, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं अन्य गणमान्य विद्वज्जनों की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस अवसर पर श्री प्रदीप मोहन्ती द्वारा मंचस्थ अतिथियों का अभिनन्दन तथा स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया गया। इसके अनन्तर श्री अंकुर जैन, श्री सन्दीप शर्मा, सुश्री अस्मि तुलस्यान आदि प्रतिभागियों द्वारा कार्यशाला विषयक अपने अनुभव प्रकट किए गए। श्री अंकुर जैन ने कहा कि इस कार्यशाला में डॉ. पद्मा ने हमें अपने जीवन का सार प्रदान किया है। श्री सन्दीप शर्मा ने कहा कि इस कार्यशाला में हमने जो भी सीखा है, वह हमारे सम्पूर्ण जीवन की बहुत बड़ी ख्याति है। सुश्री अस्मि तुलस्यान ने कहा कि इस कार्यशाला में हमें सिद्धान्त एवं प्रयोग दोनों एक साथ सीखने को मिले हैं। इसके अनन्तर मंचस्थ अतिथियों द्वारा सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। तत्पश्चात् डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम् ने अपने गुरुवचन प्रस्तुत करते हुए कहा कि नाट्यशास्त्र देश एवं काल से परे है। यह प्रत्येक काल एवं प्रत्येक देश में प्रासंगिक है। किसी भी कला की अन्तिम परिणति रस है, जिनके द्वारा व्यक्ति अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है तथा नाट्यशास्त्र इस अभिव्यक्ति का सर्वोत्कृष्ट साधन है। इन्होंने इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का विशेष धन्यवाद किया, जिसने नाट्यशास्त्र और राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय तथा भरत इलंगो फाउंडेशन फॉर एशियन कल्चर के मध्य कड़ी के रूप में कार्य किया और इस कार्यशाला के सफल आयोजन में अपनी भूमिका निभाई। प्रो. भरतगुप्त ने कार्यशाला के अपने सम्पूर्ति वक्तव्य में कहा कि शास्त्र परम्परा को व्यावहारिकता में लाना अत्यन्त आवश्यक है। इस दृष्टि से माननीया पद्मा सुब्रह्मण्यम् के नेतृत्व में आयोजित यह कार्यशाला ऐतिहासिक है। इन्होंने कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागियों का उत्साहवर्द्धन करते हुए कहा कि योग्य शिष्य के बिना गुरु भी अधूरा रह जाता है। तदनन्तर डॉ. सच्चिदानन्द जोशी ने अपना अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि ऐसी कार्यशालाओं के द्वारा नाट्यशास्त्र के शास्त्रीय सिद्धान्तों का जीवन में अनुप्रयोग कर शास्त्र और इनके प्रयोग की समन्वयात्मक दृष्टि का विकास होता है, जिसके परिणामस्वरूप

न केवल कलाकारों अपितु सामान्य जनमानस में भी इसके प्रति रुचि बढ़ती है। इसके साथ ही डॉ. गायत्री कनन ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए कहा कि नाट्यशास्त्र में नृत्य, वाद्य एवं गीत- इन तीनों का समाहार है, जो उभरते कलाकारों के लिए सुमार्ग प्रशस्त करता है। कार्यक्रम के अन्त में श्री अब्दुल कादिर शाह, सहायक आचार्य, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय द्वारा उपस्थित सुधीजनों के प्रति आभार प्रकट किया गया।

कार्यशाला में एक सुझाव भी दिया गया कि -
नाट्यविषयक प्रत्येक पाठ्यक्रम में इस प्रकार की कम से कम एक कार्यशाला का आयोजन किया जाए।

- **डॉ. पूनम यादव, सुश्री आकृति ठाकुर, सुश्री स्रष्टि असाटी**
कलाकोश